06 सामाजिक विज्ञान तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

इन्दु प्रसाद

सामाजिक विज्ञान के विषय अकादमिक अध्ययन के वे क्षेत्र हैं जो मानव समाज और जटिल मानवीय सम्बन्धों के विभिन्न पहलुओं का अन्वेषण करते हैं। एक न्यायपूर्ण तथा शान्तिपूर्ण समाज हेतु आधार निर्मित करने के लिए सामाजिक विज्ञान विषयों के दृष्टिकोण और जानकारी अपरिहार्य हैं। सामाजिक विज्ञान के दायरे में समाज की विविध चिन्ताएँ आती हैं, और इसकी व्यापक विस्तार वाली विषयवस्तु इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मानवशास्त्र आदि से ली जाती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क–एनसीएफ) कहती है कि सामाजिक विज्ञानों का अध्ययन विद्यार्थियों को परस्पर अधिक निर्भर होते जा रहे संसार से तालमेल बिठाने के लिए आवश्यक सामाजिक, सांस्कृतिक और विश्लेषणात्मक कौशल प्रदान करता है।

सामाजिक विज्ञानों पर मानवीय मूल्यों – जैसे कि, स्वतंत्रता, भरोसा, परस्पर सम्मान और विविधता के लिए आदर भाव का गहरा बोध – को निर्मित करने की जिम्मेदारी होती है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का लक्ष्य विद्यार्थियों में एक समालोचनात्मक नैतिक और मानसिक ऊर्जा उत्पन्न करना होना चाहिए जिससे वे इन मूल्यों के लिए खतरा बनने वाली सामाजिक ताकतों के प्रति जागरूक बनें। जिन विषयों से मिलकर सामाजिक विज्ञान बनता है उनकी अपनी विशिष्ट पद्धतियाँ होती हैं जिनको देखते हुए उनके बीच में सीमारेखाओं का बना रहना उचित प्रतीत होता है। पर इसके साथ ही, जहाँ भी अन्तरविषयी दृष्टिकोण सम्भव हों उन्हें भी दर्शाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को योग्य बनाने वाली पाठ्यचर्या के लिए उसमें ऐसे विषयसूत्रों का समावेश करने की जरूरत है जो बहुविषयी सोच में सहायक हों।

एनसीएफ के अनुसार सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु का लक्ष्य परिचित सामाजिक यथार्थ का समालोचनात्मक अन्वेषण करने और उसके बारे में प्रश्न द्वारा विद्यार्थियों की चेतना को ऊपर उठाना होना चाहिए। इसमें विशेष रूप से विद्यार्थियों के अपने जीवन–अनुभवों से जुड़े नए आयामों और नई चिन्ताओं को जोड़ने की बहुत सम्भावनाएँ होती हैं। इसलिए सामग्री को चुनना और उसे ऐसी अर्थपूर्ण पाठ्यचर्या के रूप में व्यवस्थित करना जो विद्यार्थियों को समाज की समालोचनात्मक समझ विकसित करने में सक्षम बनाए, एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

सामाजिक विज्ञान के 'अनुपयोगी' विषय होने की आम धारणा के प्रति एनसीएफ सचेत है। कक्षा में इसकी पढ़ाई की प्रक्रिया आत्महीनता के इस बोध से ग्रस्त रहती है, और शिक्षक तथा विद्यार्थी, दोनों ही इसकी विषयवस्तु को समझने के प्रति उदासीन रहते हैं। स्कूल की पढ़ाई के प्रारम्भिक चरणों से ही

> *बिना समझे जानकारी को सिर्फ याद रखने के बजाय अवधारणाओं को तथा सामाजिक, राजनैतिक वास्तविकताओं का विश्लेषण करने की योग्यता को विकसित करने पर जोर दिया जाना चाहिए।*

विद्यार्थियों को प्रायः यह संकेत दिया जाता है कि प्राकृतिक विज्ञान सामाजिक विज्ञानों से 'श्रेष्ठ' होते हैं, और इस कारण वे 'मेधावी' विद्यार्थियों के लिए होते हैं। ऐसा माना जाता है कि सामाजिक विज्ञान केवल जानकारी प्रदान करते हैं और पाठ्यसामग्री पर केन्द्रित होते हैं।

इसलिए विषयवस्तु को परीक्षाओं के लिए रटे जाने वाले तथ्यों की कतार लगाने की बजाय अवधारणात्मक समझ पर केन्द्रित रहने की आवश्यकता है। बिना समझे जानकारी को सिर्फ याद रखने के बजाय अवधारणाओं को तथा सामाजिक, राजनैतिक वास्तविकताओं का विश्लेषण करने की योग्यता को विकसित करने पर जोर दिया जाना चाहिए। इस बात को पहचानना भी जरूरी है कि सामाजिक विज्ञानों में भी वैज्ञानिक जाँच पड़ताल की उतनी ही गुँजाइश होती है जितनी प्राकृतिक तथा भौतिक विज्ञानों में होती है। साथ ही यह भी दर्शाए जाने की जरूरत है कि सामाजिक विज्ञानों के द्वारा उपयोग की जाने वाली विधियाँ किस प्रकार प्राकृतिक और भौतिक विज्ञानों से भिन्न होते हुए भी उनसे घटिया स्तर की कतई नहीं होतीं।

एनसीएफ **ज्ञानार्जन के दृष्टिकोण में एक बुनियादी बदलाव** प्रस्तावित करता है, जिसके अनुसार :

- पाठ्यपुस्तक जानकारी का एकमात्र स्रोत होने के बजाय पाठ्यपुस्तक की भूमिका मुद्दों को समझने का एक खास तरीका सुझाने की हो।
- अतीत और उसके भी अतीत की 'मुख्यधारा' के विवरण को

बदलकर उसमें और अधिक समूहों और क्षेत्रों को शामिल किया जाए।

- उपयोगितावाद के बजाय समतावाद को अपनाया जाए।
- पाठ्यपुस्तक को एक बन्द बक्से की तरह न देखकर उसे एक गतिशील दस्तावेज की तरह देखा जाए।

यह परिवर्तन इसलिए सुझाया गया है ताकि भारतीय राष्ट्र की अनेक प्रकार से की गई ऐसी कल्पनाओं को समाहित किया जा सके जिनमें राष्ट्रीय दृष्टिकोण को स्थानीय सन्दर्भों से जोड़कर उसे सन्तुलित बनाने की आवश्यकता को ध्यान में रखा गया हो। इसके साथ ही, भारत के इतिहास को शेष विश्व से पृथक मानकर नहीं पढ़ाया जाना चाहिए, बल्कि उसे संसार के अन्य भागों में घट रही घटनाओं से जोड़ा जाना चाहिए। एक विषय के नाम की तरह नागरिक शास्त्र के स्थान पर राजनीति विज्ञान का उपयोग करने का सुझाव दिया गया है। भारतीय स्कूली पाठ्यचर्या में नागरिक शास्त्र का प्रवेश औपनिवेशिक दौर में अँग्रेजी राज के खिलाफ भारतीयों में बढ़ रही 'विद्रोह' की भावना की पृष्ठभूमि में हुआ था। आज्ञापालन और निष्ठा पर जोर देना नागरिक शास्त्र के प्रमुख तत्व थे। पर, राजनीति विज्ञान नागरिक समाज को ऐसा क्षेत्र मानता है जो संवेदनशील, जाँचने–परखने वाले, विचारवान और रूपान्तरकारी नागरिक बनाता है।

लिंगभेद के मुद्दों के समाधान के लिए यह जरूरी है कि स्त्रियों के दृष्टिकोणों को किसी भी ऐतिहासिक घटना या समसामयिक चिन्ताओं पर होने वाली चर्चा में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए। इसके लिए ज्ञानार्जन के दृष्टिकोण को उन पितृसत्तात्मक पूर्वधारणाओं से हटाना आवश्यक है जो अधिकांश वर्तमान सामाजिक अध्ययन का आधार हैं। बच्चों की स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ताओं पर तथा किशोरावस्था के दौरान होने वाले परिवर्तनों (जैसे माता पिता, हमउम्र साथियों, विपरीत लिंगियों और व्यापक तौर पर वयस्कों के संसार के साथ बदलते हुए सम्बन्ध) पर भी समुचित विचार किए जाने की जरूरत है। मानवाधिकारों की अवधारणा को अब वैश्विक सन्दर्भ में देखा जाता है, तथा एनसीएफ की अनुशंसा है कि बच्चों को उनकी उम्र के अनुकूल तरीके से सार्वभौमिक मूल्यों से परिचित कराया जाए।

एनसीएफ की दृष्टि में सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन से बच्चों में निम्नलिखित **क्षमताएँ** विकसित होना चाहिए :

- उस समाज को समझना जिसमें वे रहते हैं।
- समाज को विभिन्न तरीकों से रूपान्तरित करने और उसकी दिशा बदलने का प्रयास कर रही ताकतों को समझना।
- भारतीय संविधान में स्थापित मूल्यों का महत्व समझना।
- बड़े होकर समाज के सक्रिय, जिम्मेदार और विचारवान सदस्य बनना।
- विभिन्न मतों, जीवनशैलियों तथा सांस्कृतिक रिवाजों का आदर करना सीखना।
- दूसरों से मिले विचारों, संस्थाओं और रिवाजों पर सवाल उठाना और उन्हें जाँचना परखना।
- पढ़ने की आनन्ददायक सामग्री देकर उन्हें पढ़ने में आनन्द लेना सिखाना।
- ऐसी गतिविधियों में भाग लेना जो सामाजिक और जीवन सम्बन्धी कौशलों के विकसित करने में उनकी मदद करें।

विभिन्न स्तरों पर सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण के एनसीएफ में वर्णित **लक्ष्य** :

1. प्राथमिक स्तर

- प्रेक्षण, पहचान और वर्गीकरण करने के कौशल विकसित करना।
- प्राकृतिक और सामाजिक परिवेशों के अन्तर्सम्बन्धों पर जोर देते हुए बच्चों में पर्यावरण की समग्र तथा समेकित समझ विकसित करना।
- बच्चों को सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाना और उनमें भिन्नता और बहुलता के लिए आदर भाव विकसित करना।

2. उच्च प्राथमिक स्तर

- मानव जाति तथा अन्य जीवनधारियों के आवास के रूप में पृथ्वी की समझ विकसित करना।
- विद्यार्थियों से अपने क्षेत्र, राज्य, और देश का वैश्विक सन्दर्भ में अध्ययन करने की शुरुआत करवाना।
- संसार के अन्य भागों में घट रही समकालीन घटनाओं का सन्दर्भ देते हुए विद्यार्थियों से भारत के अतीत के अध्ययन की शुरुआत करवाना।
- देश की सामाजिक एवं राजनैतिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं के काम करने और उनकी गतिकी से विद्यार्थियों का परिचय करवाना।

इस स्तर पर, सामाजिक विज्ञानों के विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों – जिनकी सामग्री इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र से ली जाएगी – से विद्यार्थियों का परिचय करवाना।

3. माध्यमिक स्तर

निम्न उद्देश्यों के लिए विश्लेषणात्मक और अवधारणात्मक कौशल विकसित करना :

- आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन तथा विकास की प्रक्रियाएँ समझना।
- सामाजिक और आर्थिक मुद्दों तथा चुनौतियों – जैसे गरीबी, बालमजदूरी, विपन्नता, निरक्षरता आदि – की समालोचनात्मक जाँच पड़ताल करना।
- एक लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष समाज में नागरिकों के अधिकार और जिम्मेदारियाँ समझना।
- संवैधानिक दायित्वों के पालन में राज्य की भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ समझना।
- विश्व की अर्थव्यवस्था और राज्यतंत्र के सन्दर्भ में भारत में परिवर्तन और विकास की प्रक्रियाएँ समझना।
- स्थानीय समुदायों के पर्यावरण से सम्बन्धित अधिकारों, संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल और साथ ही प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण की आवश्यकता का महत्व समझना।

माध्यमिक स्तर पर, सामाजिक विज्ञानों में इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र के तत्व शामिल रहते हैं। यहाँ ध्यान प्रमुख रूप से समकालीन भारत पर होना चाहिए।

4. उच्चतर माध्यमिक स्तर

- अपनी अभिरुचियाँ खोजने और अपनी योग्यताएँ आँकने में विद्यार्थियों की सहायता करना ताकि वे अपने लिए विश्वविद्यालय के उपयुक्त पाठ्यक्रम और/ या कार्यक्षेत्र चुन सकें।
- विभिन्न अध्ययनक्षेत्रों में ज्ञान के उच्च स्तरों को जानने समझने के लिए उनको प्रोत्साहित करना।
- कल के नागरिकों में समस्याएँ हल करने की क्षमताओं और सृजनात्मक सोच को बढ़ावा देना।
- अलग–अलग विषयों में आँकड़ों और जानकारियों को इकट्ठा करने और उनको व्यवस्थित करने के विभिन्न तरीकों से विद्यार्थियों का परिचय करवाना, और निष्कर्षों पर पहुँचने में उनकी सहायता करना।
- इस प्रक्रिया में नई अन्तर्दृष्टियों और ज्ञान का सृजन करना।

एनसीएफ के अनुसार, सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण में ऐसी विधियाँ अपनाई जाना जरूरी हैं जो सृजनात्मकता, सौन्दर्यबोध और समालोचनात्मक दृष्टिकोणों को पैदा करती हैं, साथ ही समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझने के लिए विद्यार्थियों को अतीत और वर्तमान के बीच सम्बन्धों को जोड़ने में समर्थ बनाती हैं। समस्याओं का समाधान खोजना, नाट्य रूपान्तरण करना और विभिन्न स्थितियों के स्वांग रचना, ये ऐसी कुछ गतिविधियाँ हैं जिनका उपयोग किया जा सकता है। शिक्षण में तस्वीरों, लेखाचित्रों, चार्टों और नक्शों तथा पुरातात्विक और भौतिक संस्कृतियों की अनुकृतियों समेत दृश्य–श्रव्य सामग्रियों का इस्तेमाल करना चाहिए।

सीखने की प्रक्रिया को सहभागितापूर्ण बनाने के लिए सिर्फ जानकारी प्रदान करने की परम्परा से हटकर चर्चा और बहस पर जोर देने की जरूरत है। सीखने की यह पद्धति शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को सामाजिक वास्तविकताओं से जीवन्तता के साथ जोड़े रखेगी। व्यक्तियों और समुदायों के जिए गए अनुभवों के माध्यम से विद्यार्थियों को अवधारणाएँ समझाई जाना चाहिए। यह देखा गया है कि कक्षा के सन्दर्भों में सांस्कृतिक, सामाजिक और वर्गों के भेद खुद ही अपने पक्षपात, पूर्वाग्रह और रवैये पैदा करते हैं। इसलिए शिक्षण पद्धति में खुलापन होना जरूरी है। शिक्षकों को कक्षा में सामाजिक यथार्थ के विभिन्न आयामों की चर्चा करना चाहिए, और धीरे–धीरे स्वयं अपना और अपने विद्यार्थियों का आत्मबोध प्रगाढ़ करने की ओर बढ़ना चाहिए।

पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं में विषयवस्तु, भाषा और तस्वीरें समझ में आने वाली, लिंगभेद के प्रति संवेदनशील और हर प्रकार की सामाजिक असमानताओं के प्रति आलोचनात्मक होना चाहिए। पाठ्यपुस्तकें आगे की जाँच पड़ताल के रास्ते खोलती हुई दिखना चाहिए और विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों के पार जाकर आगे और पढ़ने एवं प्रेक्षण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

इन्दु प्रसाद *अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, बंगलौर में एकेडमिक्स एण्ड पेडागोजी प्रमुख हैं। इसके पहले उन्होंने तमिलनाडू और कर्नाटक के विशेष/सर्वसुलभ स्कूलों में 15 वर्ष से भी अधिक समय तक अध्यापिका के रूप में विभिन्न प्रकार की तंत्रिका चुनौतियों से जूझ रहे बच्चों के साथ काम किया है। उनसे इस indu@azimpremjifoundation.org ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*